

Gandhian Way of Swaraj

Gandhian Way of Swaraj

Dr. Arjun Mishra



Dr. Arjun Mishra

Dr. Arjun Mishra
Seminar
28/09/2011



Ankit Publications

R-69, 3rd Floor,
Model Town-3, Delhi-110009



Gandhian Way of Swaraj

© Editor

First Published in 2018

₹ 695

ISBN 978-93-81234-68-6

Authors are fully responsible for the content of their chapter. Editor and Publisher of the book are not responsible for the statements and opinions expressed by the authors in their chapter published in the book.

All disputes subject to Delhi Jurisdiction.

Published by: **Ankit Publications**
R- 69, 3rd Floor,
Model Town-III, Delhi - 110009
Tel. : 09891553405
E-mail: ankitpublications@gmail.com

Laser Typesetting: Aarati Computers, Delhi-110 009

Printed at: Balaji Offset, Delhi

✓ Contents

Acknowledgement	7
Introduction	9
1. The Quintessence of Hind Swaraj	11
-- Dr. Seema Pasricha	
2. Relevance and Necessity of Gandhian Thought for Mankind	40
-- Dr Anurag Ratna	
3. Gandhi's Thoughts on Swaraj, Satyagrah and Spirituality	67
-- Dr. Rajani Srivastava	
4. Socialism in India as Hypothesised by M.K. Gandhi	76
-- Dr. Anjula Rajvanshi	
-- Dr. Sonika Choudhary	
5. Gandhi: Techniques of Conflict Management	91
-- Dr. Nivedita Kumari	
-- Dr. Shivali Agarwal	

Socialism in India as Hypothesised by M. K. Gandhi

Dr. Anjula Rajvanshi and Dr. Sonika Choudhary

Gandhi ji was an optimist thinker. He practiced what he preached and that is why he is attracting attention now. Within India a lot more people are reaching out for Gandhi in order to find themselves. Gandhi himself was not a system builder but he had a complete scheme of concepts on the basis of which a most appropriate and most modern model of economic and political development could be built. Our Prime Minister Narendra Modi is following the concept of Gandhi. Modi ji is also focusing on self employmacy, skill development, facilities to farmers, basic education with the training of yoga and related to hand jobs, equality, punctuality, small industries and basic facilities to all class of society as well as below poverty line population, small savings etc .

- Associate Professor, Department of Sociology, RG PG College, Meerut, Email- dr.anjularajvanshi@gmail.com
- Associate Professor, Department of Home Science, RG PG College, Meerut, Email- sonikachaudhary11@yahoo.in

Gandhi Ji was not even a philosopher in the traditional sense. But he developed a total approach to man and his problems as he went along. He devoted his whole life for the services of the people. Inequality, poverty, injustice, casteism, individualism, selfishness and slavery are and were the chronic disease of the society, which have been destroying the roots of Indian society. As per the vision of Gandhi ji, Problem is chronic but curable. J D Sethi (1978:31) said that *Gandhi would have given greater importance to the economic factor than Marx would when dealing with the question of poverty. For example, when Gandhi said to a poor man that God comes in the form of bread, he was being more or less a Marxist. But beyond that he would never go in asserting that everything that followed was determined by economic forces.*

For the solution of poverty and unequal distribution of means and goods, Gandhi explained the concept of Socialism. He said that after using the concept of Socialism, these problems can be removed from the society. Socialism is a system of a social order that must aim at the total development of human personality. The development of our personality is related not only with physical or material development rather with our mental and spiritual development as well. According to Rajeshwar Pardey (1979:272-273), *Gandhi ji wanted to build real community life for which the village situation is and was more favourable than the urban. He wanted to build democracy from the bottom upwards which he could do only by making the villages the bases of his operations. He sought to lay the foundations of democracy for the moral ideal of man which finds a hostile milieu in the cities. However since a city bases itself upon the subordination of belief to industrial necessity, it is not in accordance with the greatest vision of man and it is not safe either.*

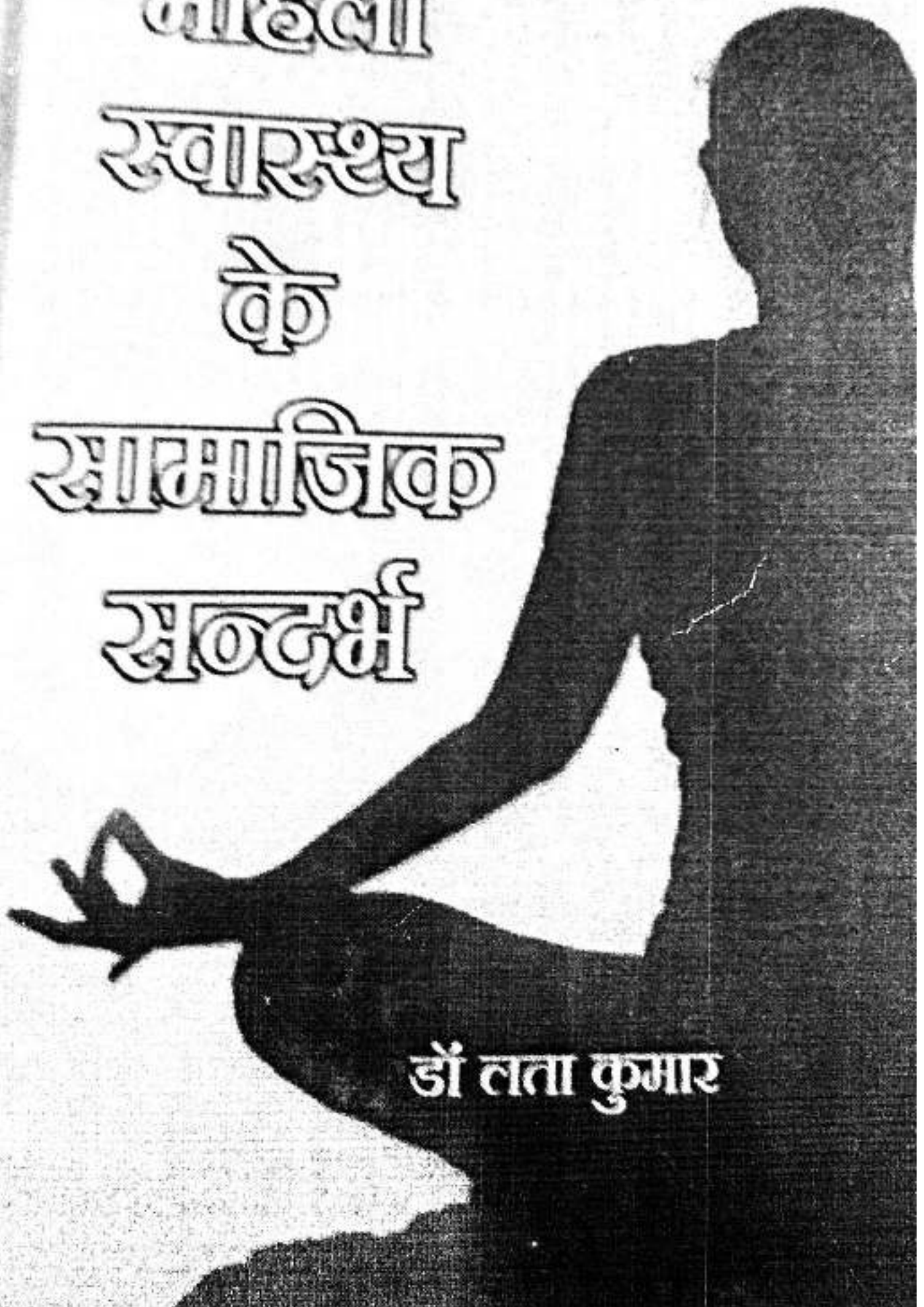
J S Mathur (1985:Preface) wrote the preface of J K Mehta's book 'Gandhian Thought: An Analytical Study'.

Self attested,
26/09/2021

Sonika
26/09/2021

महिला
स्वास्थ्य
के
सामाजिक
संदर्भ

डॉ लता कुमार



Name : महिला स्वास्थ्य के सामाजिक संदर्भ

First Published

2018

ISBN :

978-93-87922-37-2

Price : ₹ 450/-

Copyright © Editor

Contributors are solely responsible for the ideas expressed in their submitted articles for publication. Editors and publisher are not responsible for it. Contributors are also responsible for the cases of plagiarism.

Printed by :

D.K. Fine Art Printers Pvt. Ltd.,

New Delhi

Published by :

Anu Books

H.O. Shivaji Road, Meerut, 0121-2657362, 01214007472

Branch : H-48, Green Park Extension, New Delhi. 9997847837

Glasgow (UK)+447586513591

- महिलाओं का स्वास्थ्य और उत्पीड़न
की रजनी श्रीवास्तव सुधी प्रसू राणी 61
- महिला स्वास्थ्य शिक्षा - एवं सशक्तिकरण
सुधी सतीश गुप्ता 67
- राजस्थान राज्य के टोंक जिले में परिवार नियोजन व गर्भनिरोधक
साधनों के प्रयोग में नारी की भूमिका
डॉ० विजयी चौहान, सुश्री निशा सिंह 75
- मध्यकाल में परदा का महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव
डॉ० सुर्वकांत शर्मा 85
- महिलाओं के लिए रामबाण औषधि है योग
डॉ० स्वर्ण लता कदम 88
- स्वस्थ महिलाएं : देश के विकास की नींव
डॉ० उर्वशी 92
- ग्रामीण विकास के संदर्भ में ग्रामीण महिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं
ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा : एक सशक्त माध्यम
डॉ० विक्रम सिंह 97
- कैरिबर और मातृत्व के मध्य उभरते नूतन समाजशास्त्रीय प्रतिमान
डॉ० विवेक गुप्ता 103

महिला स्वास्थ्य: सरकारी योजनाओं के परिदृश्य में

डॉ० आनंद मिश्र

एसेसिएट प्रोफेसर-राजकीय विश्वविद्यालय
कुठ भादवाणी राजकीय महिला स्वास्थ्य सेवा
महाविद्यालय, कादरपुर (मिर्जापुर जिला)

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भारतीय महिलाओं की स्थिति अभी भी विचलित है। इसे चूँकि जन्मदात्री है इसलिए उसे ज्यादा एवं कुछ विशेष ध्यान की आवश्यकता का समर्थन करना पड़ता है। आज महिलाओं के सामने सबसे बड़ी समस्या उनके स्वास्थ्य को संभालना है चाहे एड्स हो या कांसासर, मलेरिया हो या प्रसूति संबंधी बीमारियाँ, महिलाएँ ही इन सबसे अधिक पीड़ित हैं। आज विकसित संसार विकसित और वरीब लगभग सभी राष्ट्रों में महिलाओं की दशा दयनीय है। विश्व के सभी राष्ट्रों में महिलाओं की उन्नति दीन-हीन है। महिलाओं के लिए समाज में रोज नए-नए कठौते जाये कर दिए जाते हैं। उठना-बैठना, खाना-पीना लगभग सभी बातों पर बाधती है।

अच्छा स्वास्थ्य और परिवार नियोजन घर की महिला, बच्चे व पूरे परिवार के लिए ही महत्वपूर्ण है। भारत की तेजी से बढ़ रही जनसंख्या के पीछे लड़ी है अविद्या, गरीबी और अज्ञानता। सरकार ने महिलाओं को प्रसूति लाभ संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से इन गरीब महिलाओं अर्थात् जननियों को सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है। मानव विकास सूचकांक का सामाजिक-आर्थिक मानदंड, स्वास्थ्य और शिक्षा जिराका अंग है, महिलाओं के पक्ष में नहीं जाता है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति संबंधी राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि महिलाओं के स्वास्थ्य व विशेष रूप से प्रभाव डालने वाले सांख्यिक मानदंड हैं- विवाह के पीछे प्रसूति, विवाह की आयु, जनन क्षमता की दर और बच्चे का लिंग, परिवारिक संरचना और सामाजिक मान्यताओं के अनुसार प्रसूति

महिलाओं का स्वास्थ्य और उत्पीड़न

डॉ० रजनी श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)

रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ

सुश्री ऋतु रानी

शोधार्थी

रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ

भारत जैसे महान देश में महिलाओं की स्थिति पर हमेशा चिंता व्यक्त की जाती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में सरकारी प्रयासों के द्वारा महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की हाल में जारी रिपोर्ट में महिलाओं की स्थिति को लेकर कुछ सकारात्मक आँकड़े हैं तो कुछ कमी भी है। बाल-विवाह की दर में गिरावट आने से महिला स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। यूनीसेफ की रिपोर्ट के अनुसार प्रसव से होने वाली मौतों में अब पहले की अपेक्षा कमी आई है। लेकिन अब भी स्थिति में कुछ ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। देश में हर साल 45 हजार महिलाओं की मौत प्रसव के दौरान हो जाती है। भारत की महिलाएँ पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच अपने आप पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती हैं। इससे वे कई गम्भीर बीमारियों का शिकार हो जाती हैं जैसे रक्त अल्पता, डिप्रेसन, पीठ दर्द, मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप (पीसीओएस), पॉलीसिस्टिस आवेरिन सिंड्रोम, एच०आई०वी०, कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर, क्षय रोग आदि की शिकायत भी देखने को मिलती है। दोहरी जिम्मेदारी और तनाव के बीच स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं से महिलाएँ घिर चुकी हैं।

हमारे समाज में पुरुषों का वर्चस्व व अहमियत अधिक होने के कारण भी महिलाओं के स्वास्थ्य को तुच्छ व गौण समझा जाता है। समाज में दोगम दर्जे का जीवन जीने को मजबूर ये महिलाएँ अभी भी स्वतन्त्र निर्णय को लेकर अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु अकेले चिकित्सकों को नहीं बता सकतीं, उनसे परामर्श नहीं ले पातीं। अतः समय पर चिकित्सा उपलब्ध नहीं होने से उनका स्वास्थ्य गर्त में चला जाता है।

एक सुसभ्य व स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिये महिलाओं के स्वास्थ्य की अहम भूमिका होती है। ज्ञातव्य है कि महिलाओं के कंधों पर माँ, बेटी, बहन, पत्नी आदि के रूप में अनेक दायित्वों का भार होता है। एक स्वस्थ महिला इन सब दायित्वों का निर्वहन सफलता पूर्वक करते हुए परिवार समय व देश के विकास की राह को सरल व सुगम



Sinews of India's Internal Security In 21st Century

EDITORS

PRASHANT AGARWAL • SANJAY KUMAR

Sinews of India's Internal Security in 21st Century

Published by

Smt Neelam Batra

G.B. Books

PUBLISHERS & DISTRIBUTORS

4832/24, S-204 Prahlad Lane

Ansari Road, New Delhi-110002

Ph: 09810696999, 011-41002854

E-mail: gbbooks@rediffmail.com

© Allahabad State University, Allahabad

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior written permission of the authors and the publishers.

The views expressed in this book are those of the author and not at all the publisher. The publisher is not responsible for the views of the author and authenticity of data, maps in any way whatsoever. All disputes are subject to Delhi jurisdiction.

First published 2018

ISBN: 978-93 83930-73-9

Composing and Printing in India

12.	Conceptualising Environmental Security <i>Dr. Sanjay Kumar</i>	151
13.	Energy Security : A Road Map for India <i>Dr. Neelam Kumari</i>	167
14.	India's Environmental Security Policy <i>Dr. Dharendra Dwivedi</i>	181
15.	Naxalism : Today's India's Burning Internal Security Issue <i>Dr. A.K. Dixit</i>	187
16.	Naxal Violence: Internal and External Linkages <i>Dr. Bina Rai</i>	198
17.	Perspective on India's Internal Security: Issues & Challenges <i>Deepak Kumar</i>	211
18.	Naxalism and India's Internal Security Problem <i>Dr. Krishna Nand Panday</i>	223
19.	India's Internal Security : Challenges and Dimensions <i>Dr. Krishna Nand Shukla</i>	241
20.	Naxalism as a Threat to Human Security : Special Reference of Chhattisgarh <i>Dr. Rajeev Rathore & Dr. Gulab Chandra Lalit</i>	260
21.	Countering Naxal threats in the 21st Century <i>Dr. Anita Rathi & Dr. Suman</i>	272
22.	The Naxal Problem : Understanding the Issue, Challenges and Diagnostic Approach <i>Dr. Mohammad Samir Hussain</i>	289
	<i>Index</i>	316

Naxal Violence: Internal and External Linkages

16

Dr. Bina Rai
Associate Professor, Department of Political
Science, R.G. P.G. College, Meerut

Introduction

Naxalite movement, an expression of socio-economic and law & order problem was born in 1967 in a small place, Naxalbari in West Bengal. The young and fiery ideologies of the Marxist-Leninist movement in India formed the CPI (M-L), envisioning a spontaneous mass upsurge all over India. After four decades, it was the year 2006, when Prime Minister Manmohan Singh warned, "Naxalism as the greatest threat to India's internal security". The credit for the survival of the movement for over 40 years must go to the government, which has failed awfully in addressing the causes and conditions that sustain the movement.

To be successful, insurgent/militant movements have a variety of requirements, most of which can be grouped in two categories—human and material. In general, insurgents most need outside support of all kinds when they cannot obtain this support domestically. Safe havens, whether inside the country where the insurgent/militant operate or across international boundaries, are essential to the success of any insurgent militant movement. Sanctuaries protect the group's leadership and members; provide a place where insurgent/militant can rest, recuperate, and plan future operations; serve as a staging area from which to mount

ISBN 978-81-923100-4-6

भारतीय कला की विधियाँ एवं प्रविधियाँ

Methods and Techniques of Indian Art

डॉ अर्चना राणी

भारतीय कला की विधियाँ एवं प्रविधियाँ (Methods and Techniques of Indian Art)



सम्पादक

डॉ० अर्चना रानी

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर

विजुएल आर्ट : ड्राईंग एवं पेण्टिंग विभाग,

रघुनाथ गर्ल्स (पी० जी०) कॉलेज, मेरठ, उ० प्र० (भारत)

दूरभाष 0121-4050917 ई-मेल : drarchana.art@gmail.com

भारतीय कला की विधियाँ एवं प्रविधियाँ

(Methods and Techniques of Indian Art)

सम्पादक - डॉ० अर्चना रानी

ISBN - 978-81-923100-4-6

मूल्य : ₹ 3299

150 US\$ (समय अनुसार प्रेषण-खर्च अतिरिक्त)

वर्ष : मकर संक्रान्ति, 2019

प्रथम संस्करण

सम्पादित पुस्तक पृष्ठ - 276

@ सम्पादक

इस सम्पादित पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य स्वयं लेखकों के हैं, उसमें प्रकाशक अथवा सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक अथवा सम्पादक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

आवरण पृष्ठ चित्र - जितेन्द्र डांगी, भोपाल

प्रकाशक

विजुएल आर्ट : ड्राईंग एवं पेण्टिंग विभाग (शोध केन्द्र)

रघुनाथ गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, मेरठ, उ० प्र०, भारत-250001

(NAAC Reaccreditation C-III 'A' CGPA 3.13)

(College for Excellence)

w : www.rgcollege.org

अनुक्रम

अध्याय क्र०सं०	शोधलेख-शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	ॐ आधारित चित्रों की अद्भुत रचना और उसकी अनुभूति-उत्पत्ति	श्री जसवंतसिंह माथुरी	1
2.	शिल्पी रामकिंकर : आधुनिक मूर्तिकला के पितामह (1910-1980)	अशोक कुमार गुप्ता	4
3.	प्रेमचंद के रंग	डॉ० शुकदेव श्रोत्रिय	7
4.	मोलेला की टेराकोटा पट्टिकाओं का स्वरूप एवं तकनीक	डॉ० सुरेश चन्द्र जांगिड़, डॉ० अर्चना जोशी	15
5.	जलरंग प्रयोग और पद्धति	डॉ० अन्नपूर्णा शुक्ला	19
6.	नवीन प्रयोगों की ओर उन्मुख आधुनिक कला	डॉ० नीलिमा गुप्ता	25
7.	कला एवं तकनीक	डॉ० निशा गुप्ता	31
8.	कला प्रयोगों की आधार भूमि : ग्राफिक् कला	डॉ० अर्चना रानी	34
9.	ग्राम देवता : हिमाचल लोक संस्कृति का एक अद्भुत पहलू	डॉ० विजय मा. ढोरे	40
10.	चित्रकला में नवीन विधाओं एवं तकनीक का महत्त्व	डॉ० पुनीता शर्मा	44
11.	एल्कोहल इन्क पेंटिंग	डॉ० वन्दना वर्मा	48
12.	इन्स्टैलेशन : व्यंजना का नवीन रूप	डॉ० ऋषिका पाण्डेय	53
13.	संस्थापन कला रूप : नवीन दिशा की ओर एक विधा	डॉ० अलका आर्य	57
14.	परमजीत सिंह : नई विधा के आधुनिक चित्रकार	डॉ० विनीता शर्मा	60
15.	'तन्त्र' कला के प्रमुख चित्रकार	डॉ० नाजिमा इरफ़ान	66
16.	पारम्परिक से प्रयोगधर्मिता तक की कला यात्रा	डॉ० पूनमलता सिंह	71
17.	मिति चित्रों का बदलता स्वरूप : उद्भव से विकास तक	डॉ० निधि शर्मा	75
18.	समकालीन कलाकारों की नवीन रचना सामग्री व तकनीक	डॉ० मृदुला त्यागी	81
19.	कला की नवीन विधायें एवं तकनीक	डॉ० प्रेमलता कश्यप	84
20.	विख्यात आधुनिक चित्रकार डॉ० बलदेव गम्भीर की कला तकनीक	डॉ० अभित कुमार	87
21.	वींश तकनीक परम्परा एवं उसके प्रमुख चित्रकार	डॉ० रनिका	92
22.	समकालीन कला में तकनीक	डॉ० ऋचा शर्मा	97
23.	टैगोर एवं अमृता की कला में कला की नवीन विधायें	डॉ० बबीता शर्मा	101
24.	अमूर्त कला, रंग और तकनीक	डॉ० ऋचा जैन	105
25.	घर से बाजार तक लोककला का सफर	डॉ० अमिता शुक्ला	109
26.	संपादन कला (प्रिंट माध्यम के संदर्भ में)	डॉ० वर्षा अग्रवाल	113
27.	भारतीय लोक कला की विधा 'गोदना'	डॉ० अलका सोती	118
28.	छाया कला एवं चित्रकार : कृष्णा रेड्डी	शबाहत	123

29. आधुनिक कला में तकनीकी प्रभाव	डॉ० अर्चना	127
30. विधि-प्रविधि और आज का कलाकार	डॉ० शकुन सिंह	131
31. लोक कलात्मक गतिविधियों में व्याप्त सौन्दर्य	भवना पंचोत्री	137
32. कला बनाम प्रयोगपरिमता	डॉ० शुभा प्रीवर	140
33. तकनीकी विविधता के दो मुव-सोमनाथ होर व रिगी घूमल	डॉ० आशा पंवार	143
34. अमृता शेरगिल के चित्रों का कलात्मक स्वरूप	डॉ० कल्याण	146
35. समकालीन कला की नवीन विधाएँ : युवा कलाकारों के लिए चुनौतियाँ	डॉ० आकांक्षा वर्मा	153
36. टैगोर की रचनापरिमता के नवीन आयाम	डॉ० शक्तिनी रानी	157
37. कोलाज तकनीक : एक परिदृश्य	डॉ० सुप्रिया यादव	166
38. फुलकारी कला की शैली, तकनीक व माध्यम	डॉ० ऋतु	171
39. अनेक कला चक्रों पर आधारित तकनीक	डॉ० ज्योति कुमारी	175
40. समकालीन कला में मिक्स मीडिया का बढ़ता प्रभाव	डॉ० संजय कुमार साहनी, डॉ० संजीव खानम	176
41. माध्यम एवं तकनीक के आधार पर शान्ति दवे के तैल चित्र	डॉ० दिशा दिनेश	179
42. कला की नवीन विधाएँ एवं तकनीक	शिवानी राठी	183
43. कला में प्रयुक्त नवीन विधाएँ एवं तकनीक	सविता	185
44. आधुनिक युग में कला की नवीन विधाएँ, तकनीक एवं कलाकार	पिंकी वर्मा	196
45. तकनीकी दृष्टि से सम्पन्न सुबोध गुप्ता की कला : एक कलात्मक अध्ययन	अपेक्षा चौधरी	203
46. डिजिटल पेंटिंग-एक नवीन उमरता माध्यम	निकिता जैन सिंघल	207
47. मुगल कला में राज दरबार एवं अन्तःपुर का चित्रांकन	एकता राघीच	209
48. राजस्थान के समसामयिक दृश्य-चित्र कलाकार	डॉ० बीना जैन	214
49. Traditional Aesthetic and Modernity in Contemporary Art	Dr. Jaspal Singh	224
50. New Methods and Techniques in Gond Art of Madhya Pradesh	Dr. Anu Ukande	231
51. The Legacy of A Great Artist-Bhai Gian Singh "Naqash"	Dr. Jasdeep Singh	235
52. Installation Art	Dr. Medha Fatima	238
53. Art of Englightenment	Dr. Sonal Bhardwaj	242
54. Past Modern	Ramesh Sampui	245
55. New Methods and Techniques for Teaching and Learning Drawing at secondary Level	Dr. Kalpana Gupta	250
56. Dive Deep into the Technological Aspect of Arts	Charu Arora	257
57. Visual Merchandising Puts the Art and Design Back into Retail	Akriti Singhal	260
58. New Techniques in Digital Painting	Madhulika	262



कला प्रयोगों की आधार भूमि : ग्राफिक कला

डॉ० अर्चना रानी

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ।

कला किसी भी समय की हो, कला ही होती है। वह चाहे प्राचीन काल की हो या मध्यकाल की, वह आज भी देखी व समझी जाती है। अतः प्राचीन काल में इतिहास, संस्कृति, गौरव और समाज की प्रगति का स्वरूप देखने को मिलता है। वह सदैव ही मनुष्य को आकृष्ट करती है तथा यह भी सत्य है कि कला हमेशा समकालीन समाज का दर्पण है। कला कभी एक सी नहीं रहती है। प्रकृति के परिवेश में चारों ओर होने वाले परिवर्तनों के कारण मानव-मन में सदैव कौतुहल और नया करने की भावना व्याप्त रहती है। कला एक ऐसा दर्शन है जो मनुष्य की कल्पनाओं के द्वारा विकसित होता है। विगत कुछ शताब्दी में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ ही हमारे जीवन स्तर और कार्य की दिशाओं में जो स्वामाविक बदलाव आया है उसे कलाकारों ने भी स्वीकार तथा अंगीकर करके अपनी कला में नये-नये प्रयोग आरम्भ किये। इन प्रयोगों के कारण कला प्रेमियों के आस्वादन में सदैव नयापन आया है। जिसके फलस्वरूप आज आधुनिक कला के अग्रांकित कई तकनीकों में काम हुआ है तथा कलाकार नवीन प्रयोग में संलग्न रहकर सदैव नवीन तकनीक व नवीन सामग्री की खोज में तत्पर रहा है। ये तकनीक है— वाश, तैल रंग, आला प्राइमा, डाई ब्रशिंग, इम्पेस्टो, स्क्रम्बलिंग, बोकन कलर, पेस्टल मिश्रित माध्यम, ग्वाश, इंस्टॉलेशन आर्ट, कोलाज, एक्रेलिक, ग्राफिक, लिनोकट, सिल्क स्क्रीन, प्रिंट मुद्रण आदि। आज आधुनिक समकालीन भारतीय कला में ग्राफिक कलाओं का भी आविष्कार हो चुका है। ग्राफिक कलायें उन छायाचित्रों (प्रिन्ट्स) से सम्बन्धित हैं जिनमें किसी वस्तु कला की छाप के द्वारा एक जैसे कई छापाचित्र प्राप्त कर लिये जाते हैं। वास्तव में आजकल ग्राफिक, तकनीक के नये आयामों को छू रही है। कलाकारों ने नित नूतन प्रयोग किये, वे प्रयोग विभिन्न माध्यमों में ही नहीं अपितु तकनीकों में भी हुये हैं। तकनीकों की प्रयोगधर्मिता में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हमें वैविध्य मिलता है। ग्राफिक कला को आमतौर पर Print making की श्रेणी में रखा जाता है लेकिन यह भी पेंटिंग और ड्राइंग की ही एक तकनीक है। नवीनता की खोज में कलाकारों ने माध्यम को पीछे छोड़ दिया। समस्त परम्पराओं को विदाई देने के लिये कलाकार सदैव तत्पर दिखे हैं। मानव प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोगधर्मी रहा है। उसे प्रत्येक चीज में नवीनता चाहिये।

सन् 1855 के आस-पास में भारत के कला विद्यालयों में उकेरन (एनग्रेविंग), अम्लांकन (एचिंग) और शिलालेखन (लिथोग्राफ्स) पढ़ाये जाते रहे थे। इन तकनीकों के द्वारा लिखित छवि के छापों का इस्तेमाल अधिकतर किताबों या दास्तानों में जन-जीवन के 'डाकुमेंटेशन' के लिये किया जाता रहा है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में छपी अनेक किताबों में छापा तकनीक पर आधारित दृश्य-यथार्थ के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं तथा कला का दृश्य कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में शामिल है। ग्राफिक कला एक माध्यम है जिससे चित्र के एक ही प्रकार के कई प्रिंट निकाले जा सकते हैं तथा Print Making की तकनीक या विधायें हैं जैसे— रिलीफ, इन्टेग्लियों, लिनोकट,

‘तन्त्र’ कला के प्रमुख चित्रकार

डॉ० नाजिमा इरफान

प्रवक्ता, आर०जी० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ।

कला हमारे मन की सच्चाइयों से बहुत अधिक निकट होती है क्योंकि हम अपनी भावनाओं में बहुत कुछ अपने अंदर का ही जीवन जीते हैं। सामने नजर आने वाली चीज को देखते हुए हम उसको देखते ही नहीं, बल्कि अपने अंदर की संज्ञा या चेतना से पकड़ते हैं और जिस रूप में हम सामने नजर आने वाली चीज को पकड़ते हैं वह रूप हमारे मन और मस्तिष्क के लिये अधिक अर्थपूर्ण होता है और सच्चाई तो यही है कि वही रूप हमारे जीवन पर असर छोड़ता है और हमारे संस्कार बनकर हमारा हिस्सा बन जाता है।

यह तथ्य स्वीकार्य है कि प्रारम्भिक काल से मशीनी सभ्यता या आधुनिक काल के विकास तक कला उपयोगिता से अंशतः जुड़ी रही। भित्ति के आदिम चित्रों में, हथियारों के आकारों में, उपयोगी बर्तनों में ज्यामितीय कलात्मकता का प्रादुर्भाव हुआ। सदियों तक उपयोगिता तथा ज्यामितीय कलात्मकता की धारा साथ साथ प्रवाहित होती रही। लम्बी कालावधि तक कला धर्म से जुड़ कर चलती रही और साथ-साथ उपयोगिता से हट कर शुद्ध ज्यामितीय कला एवं ललित कला के रूप में स्थापित हुई। किन्तु आज इस तथ्य को मानने में कोई संकोच नहीं होना चाहिये कि संग्रहालयों और कला विधियों की कलाकृतियों सामाजिक मनुष्य को बहुत कम आकर्षित और प्रभावित कर रही हैं। सामान्य आदमी तक केवल कला के रूप की ही पहुँच है और उपयोगिता के साथ साथ व्यवसायी कला जन रुचि को सर्वाधिक प्रभावित कर सकती है। प्राचीन भारत में गुप्त रहस्यात्मक सिद्धि की क्रिया का नाम तन्त्र था। इसके तीन अंग थे— यन्त्र, तन्त्र और मन्त्र। इसके अन्तर्गत ज्यामितीय अमूर्त रूप से रेखांकित होते थे। प्राचीन भारतीय धर्म साधना तथा दर्शन में भी इसका महत्व रहा है। जिस प्रकार पश्चिमी देशों के कलाकार विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा लेकर अपनी कला शैलियों का विकास कर रहे हैं उसी प्रकार आधुनिक भारतीय चित्रकार भी देश-विदेश की विभिन्न युगों की कला शैलियों के समन्वय में लगे हुए हैं। भारत के अधिकांश चित्रकार यूरोपीय शास्त्रीय कला यथार्थवाद, प्रभाववाद तथा अभिव्यंजनावाद से प्रेरित हुए जिसके पश्चात् धनवाद की प्रेरणा का दौर आया। इसके अन्तर्गत कलाकार अमूर्त ज्यामितीय रूपों की ओर उन्मुख हुए। तांत्रिक कला की प्रेरणा भी ज्यामितीय अमूर्त आकृतियों में निहित प्रतीकता से प्रारम्भ हुई थी किन्तु इसके साथ तांत्रिक शब्द जुड़ते ही कई प्रकार के प्रतीकों का इस कला में प्रयोग होने लगा और वह विशुद्ध ज्यामितीय अमूर्त शैली का आंदोलन न रहकर दार्शनिक प्रतीकात्मक रूप में अधिक विकसित हुई। ज्यामितीय आकृतियों में प्रयुक्त प्रतीकों की व्याख्या ही शैली की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो गयी। नीरद मजूमदार ने कला को अनुष्ठान मूलक मानते हुए सन् 1957 के आसपास प्रतीकात्मक ज्यामिति के आधार पर चित्रों की रचना की। साथ ही देवाकृतियों के चित्रों में देवनागरी मंत्रों को समस्त चित्र के अन्तराल में पृष्ठभूमि के रूप में संयोजित किया। इसके पश्चात् वे काल्पनिक ज्यामितीय चित्रण करने लगे जिसमें बड़े बड़े ज्यामितीय क्षेत्रों में अलग-अलग रंग भरे होते थे। इसे अन्तराल की वर्ण ज्यामिती भी कहा गया।



IN PRESENT SCENARIO: IMPACT AND CHALLENGES

**Editor:
Dr. Manjeet Kaur**

First Published
2018

GST in Present Scenario: Impact and Challenges

ISBN: 978-81-936088-0-7

Price : 400 Rs/-

Copyright © authors

Printed by :
D.K. Fine Art Press Pvt. Ltd.,
New Delhi

Published by :
Anu Books
H.O. Shivaji Road, Meerut. 0121-2657362, 01214007472
Branch : H-48, Green Park Extension, New Delhi 110016, 9997847837
Glasgow (UK)+447586513591

Preface

It gives me immense pleasure to present the inaugural volume of GST IN PRESENT SCENARIO - IMPACT AND CHALLENGES to the students and academicians. Several articles provided by the teachers, students, research scholars have been published in this book to make it more comprehensive and meet the requirements of the readers in an effective way. The book focuses on giving the opportunity for discussion and exchange of ideas on GST. The articles published in the book provides a practical approach and effective implementation of GST in the economy and provides an opportunity to recognize the impacts and Challenges of GST in various sectors of the economy. I hope that the book would be really helpful and useful for entrepreneurs, tax authorities, corporate executives, academicians, traders, students and research scholars for future studies and research work. The book has been revised in the light of comments and suggestions received from a large number of friends and well-wishers for which I am grateful to them. I am thankful to Mr. Vishal Mithal of M/s ANU BOOKS for his continuous efforts in improving the quality of this Volume.

Comments and suggestions for the further improvement of this volume shall be highly appreciated and acknowledged.

Dr. Manjeet kaur

Done
27/09/201
Ref - Attached

CONTENTS

PREFACE

	Page No.
1. Impact of GST on Indian Economy Dr. Parul Rastogi	1
2. GST- Impact and Challenges Dr. Archana Gupta	9
3. GST: Changing the face of Indian businesses Dr. Raksha Gupta	21
4. Effect of Implementation of 'Gst' on Car Buyers in Present Scenario Vatsala Oberai	24
5. Impact of GST on Common Man in India Dr. Vandana Bhardwaj	30
6. Goods and Services Tax An Overview (GST) Sharmila Dayal	39
7. Impact of GST on Tourism Sector Rima Gupta	43
8. Goods & Service tax (GST) Simplification of Tax Structure Dr. Kavita Saxena	49
9. Impact of Goods and Services Tax on Some Industries in India Kirti Aggarwal Dinesh Kumar	56
10. GST in India Dr. Sonika Chaudhary	70
11. जी०एस०टी० एवम् भारतीय कृषक डॉ० गरिमा चौधरी	75

Key - Attested
Jemle
28/09/2021

GST in India

Dr. Sonika Chaudhary

Asso. Prof., Deptt. of Home Science

R.G. (P.G.) College Meerut

Goods and Services Tax (GST) is an indirect tax levied in India on the sale of goods and services. Goods and services are divided into five tax slabs for collection of tax - 0%, 5%, 12%, 18% and 28%. Petroleum products and alcoholic drinks are taxed separately by the individual state governments. There is a special rate of 0.25% on rough precious and semi-precious stones and 3% on gold. In addition a cess of 22% or other rates on top of 28% GST applies on few items like aerated drinks, luxury cars and tobacco products. The tax came into effect from July 1, 2017 through the implementation of One Hundred and First Amendment of the Constitution of India by the Modi government. The tax replaced existing multiple cascading taxes levied by the central and state governments. The tax rates, rules and regulations are governed by the Goods and Services Tax Council which comprises finance ministers of centre and all the states. GST simplified a slew of indirect taxes with a unified tax and is therefore expected to dramatically reshape the country's 2 trillion dollar economy.

Formation

The reform process of India's indirect tax regime was started in 1986 by Vishwanath Pratap Singh, Finance Minister in Rajiv Gandhi's government, with the introduction of the Modified Value Added Tax (MODVAT). Subsequently, Prime Minister P V Narasimha Rao and his Finance Minister Manmohan Singh, initiated early discussions on a Value Added Tax (VAT) at the state level. A single common "Goods and Services Tax (GST)" was proposed and given a go-ahead in 1999 during a meeting between the Prime Minister Atal Bihari Vajpayee and his economic advisory panel, which included three former RBI governors IG Patel, Bimal Jalan and C Rangarajan. Vajpayee set up a committee headed by the Finance Minister of West Bengal, Asim Dasgupta to design a GST model.

The Ravi Dasgupta committee was also tasked with putting in

place the back-end technology and logistics (later came to be known as the GST Network, or GSTN, in 2017) for rolling out a uniform taxation regime in the country. In 2002, the Vajpayee government formed a task force under Vijay Kelkar to recommend tax reforms. In 2005, the Kelkar committee recommended rolling out GST as suggested by the 12th Finance Commission.¹³

After the defeat of the BJP-led NDA government in the 2004 Lok Sabha election and the election of a Congress-led UPA government, the new Finance Minister P Chidambaram in February 2006 continued work on the same and proposed a GST rollout by 1 April 2010. However, in 2010, with the Trinamool Congress routing CPI(M) out of power in West Bengal, Asim Dasgupta resigned as the head of the GST committee. Dasgupta admitted in an interview that 80% of the task had been done.

In the 2014 Lok Sabha election, the Bharatiya Janata Party-led NDA government was elected into power, this time under the leadership of Narendra Modi. With the consequential dissolution of the 15th Lok Sabha, the GST Bill – approved by the standing committee for reintroduction – lapsed. Seven months after the formation of the Modi government, the new Finance Minister Arun Jaitley introduced the GST Bill in the Lok Sabha, where the BJP had a majority. In February 2015, Jaitley set another deadline of 1 April 2017 to implement GST. In May 2016, the Lok Sabha passed the Constitution Amendment Bill, paving way for GST. However, the Opposition, led by the Congress, demanded that the GST Bill be again sent back to the Select Committee of the Rajya Sabha due to disagreements on several statements in the Bill relating to taxation. Finally in August 2016, the Amendment Bill was passed. Over the next 15 to 20 days, 18 states ratified the GST Bill and the President Pranab Mukherjee gave his assent to it.

A 22-members selected committee was formed to look into the proposed GST laws. State and Union Territory GST laws were passed by all the states and Union Territories of India except Jammu & Kashmir, paving the way for smooth rollout of the tax from 1 July 2017. The Jammu and Kashmir state legislature passed its GST act on 7 July 2017, thereby ensuring that the entire nation is brought under an unified indirect taxation

Impact of GST on Indian Economy

Dr. Parul Rastogi

Asstt. Prof.

Deptt. of Commerce

R. G. (PG) College, Meerut

Abstract

Indian indirect tax system was the most complicated tax structure in the world. In different states of India the mechanism of imposing taxes, exemptions, abatements were different. This taxation system was leading to many issues such as double taxation and cascading effects etc, which was ultimately affecting to the general public with increasing prices and lack of transparency. GST is one of the most crucial tax reforms in India that is likely to change to whole scenario of present inefficient indirect tax system. GST is one indirect tax for the whole nation. It is a single tax levy on the supply of goods and services, right from the manufacturer to the consumer. Credits of input taxes paid at each stage will be available in the subsequent stage of value addition. Thus final consumer will bear only the GST charged by the last dealer in supply chain. The main purpose to implement this tax in India is to eliminate cascading effect and to replace multiple taxes as VAT, Excise duty, Service tax and Sales tax with a comprehensive tax. Now it is right time to understand it. This paper highlights the various aspects of GST and its positive and negative impact on Indian economy.

Key words- Indirect Tax, VAT, GST.

Introduction

GST stands for Goods and services tax. It was passed in the Lok Sabha on 29th march 2017 and came into effect from 1st July 2017. It was termed as one nation one tax. Introduction of GST is a significant step in the reform of indirect taxation in India. It is considered as biggest tax reform since 1947. GST will not only simplify the indirect tax structure, but it will also help to create **ONE INDIA** by eliminating geographical fragmentation. It will remove the cascading of taxes by ensuring the

2018-2019

महिला सुरक्षा

मुद्दे एवं चुनौतियाँ



Self-Attested
Munira
28/09/21

अलका तोमर
अनुज कुमार भड़ाना

ISBN : 978-81-940315-3-6

© सम्पादक



प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

मोबाइल : +9315194807

ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोजक

दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज दिल्ली-32

Self-Attested
Anuj Kumar
28/09/21

Mahila Suraksha : Mudde Evam Chunoutinya

by *Dr. Alka Tomar*

Anuj Kumar Bhadana

24. कानून-व्यवस्था के संदर्भ में महानगरीय स्तर पर उभरती हुई समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में पुलिस-प्रशासन की भूमिका: पश्चिमी उ०प्र० के मेरठ महानगर का एक अध्ययन 145
ज्योति
25. महिला समस्याएं एवं अधिकार 150
डॉ० प्रताप कुमार
डॉ० नीरजा चौधरी
26. Provision of Constitutional Safeguards For Women Security And Role of Security Apps.- And Security Centres 157
Dr. Manveen kaur
Dr. Rachna Gupta
27. Domestic Violence Act 2005: A Socio Legal Step Towards Upholding "The Rights of Women" 166
Dr. Devpal
Dr. Sushma Bhatt Thaledi
28. Women Empowerment In 21st Century India 172
Dr. Ananda Nand Tripathi
29. Sexual Harassment of Women at Workplace: A Bitter Consequences of 21st Century 178
Kumari Mamta
Kumar Rahul
Gupta Vandana
Kumari Jyoti
30. The Impact of Gendered Role on Women's Mental Health 185
Dr. Tanu R. Bali
31. Women's place In Rural Indian Society 192
Dr. Preeti kumari
32. "Measures Of Government For Economic Empowerment Of Women" 198
Pallavi Bhardwaj

Self-Attested
@kuman
28/05/21

Sexual Harassment of Women at workplace: A Bitter Consequences of 21st Century

Kumari Mamta
Kumar Rahul*
Gupta Vandana **
Kumari Jyoti***

Introduction

By looking at the present scenario where gender based violence such as sexual harassment at workplace is spreading at a thrust all around in India. Women at the public sector are more prone to this violence because of the nature of their jobs which involves interaction with their colleagues. Women are brutally harassed by the torturous suppression of not only by men but also by the whole society. Sexual assault of women is becoming one of the most common crimes in India which infringes the fundamental rights of women in the form of eve teasing, rapes and sexual harassment at work place. This lowers their performance rates and also affects their mental health. Sometimes it leads to suicides and jobs turnover. In a report by National Crime Reports Bureau, Ministry of Home Affairs, it was mentioned that the crime against women is rapidly increasing from 41.7% in 2012 to 52.2% in 2013. In the history of human development, women have been as vital in the history making as men have been. Undoubtedly, without the active participation of women in national activities, the social, economic or political progress of a country will deteriorate and become stagnant.

At present, millions of women are engaged for employment in the agriculture, industry and services. They are found in both organised and

*Assistant Professor, Dept of Home Science, RG PG College, Meerut (UP)

**Assistant Professor Dept of Defence Studies, SSV PG College, Hapur

*** Research Scholar, Dept of Food & Nutrition, Ethelind School of Home Science, SHUATS, Allahabad

**** Assistant Professor, Dept of Home Science, Govt. Girls Degree College, Samadi ahraula, Azamgarh

Self Attested
Chaman
28/09/21

Approaches to Stress Management in Modern Era

Dr. Seema Gupta

Asso. Prof., Deptt. of Psychology,
Gokul Das Hindu Girls (PG) College, Moradabad

Dr. Puja Khanna

Guest Lecturer., Deptt. of Psychology,
K.G.K.(PG) College, Moradabad

Published By :
ANU BOOKS

Delhi Meerut Glasgow (UK)
Visit us : www.anubooks.com

Approaches to Stress Management in Modern Era

First Published 2018

ISBN: 978-81-936088-7-6

Price : **Rs. 500/-**

Copyright © **Editors**

Contributors are solely responsible for the ideas expressed in their submitted articles for publication. Editors and publisher are not responsible for it. Contributors are also responsible for the cases of plagiarism.

Printed by :

**D.K. Fine Art Press Pvt. Ltd.,
New Delhi**

Published by :

Anu Books

H.O. Shivaji Road, Meerut, 0121-2657362, 01214007472

Branch : H-48, Green Park Extension. New Delhi 110016 9997847837

- | | | |
|-----|---|-----|
| 11. | STRESS MANAGEMENT TOOLS FOR MODERN ERA | 104 |
| | <i>Dr. Kamna Chaturvedi</i> | |
| 12. | A STUDY OF LIFE STRESS AND OCCUPATIONAL STRESS OF SECONDARY TEACHERS | 110 |
| | <i>Mahima Tandon</i> | |
| 13. | STRESS AND PHYSICAL EXERCISE | 125 |
| | <i>Dr. Mili Pal, Husan Jahan</i> | |
| 14. | EMOTION REGULATION: A THERAPEUTIC APPROACH | 132 |
| | <i>Sachin Kumar & Dr. Kumkum Pareek</i> | |
| 15. | A STATISCAL ANTIDOTE TO STRESS | 143 |
| | <i>Dr. Nidhi Nagar</i> | |
| 16. | FACTORS CAUSING STRESS AMONG WORKING WOMEN AND STRATEGIES TO COPE UP | 153 |
| | <i>Dr. Mamta Rani</i> | |

EMOTION REGULATION: A THERAPEUTIC APPROACH

*Sachin Kumar
& Dr. Kumkum Pareek*

STRESS AND EMOTION

When it is not possible to control what happens, then it is obviously possible to control how you feel and react to it.

It is very common to report the stress in day-to-day life. Almost every change in environment, whether pleasant or unpleasant, demands people's response and are tinged with feelings and emotions. The force which compels one to response in a certain way to fulfill the demands of situation can be said as stress. Because this force or stress motivate one to adapt to the changes in environment, this can be said important to deal effectively with environment. According to Morgan et. al (1993), the term stress can be defined as "as an internal, which can be caused by physical demands on the body (disease conditions, exercise, extremes of temperatures, and the like) or by environmental and social situations which are evaluated as potentially harmful, uncontrollable, or exceeding our resources for coping". In short, stress can be said as a way of responding in terms of automatic process known as the fight or flight response, our body does to any kind of demand or threat. And no doubt, fear, hope, repulsion, disappointment and dismay might be experienced due to stressful affairs. This is also possible that stress is experienced due to certain feelings or emotions. Therefore stress can be said as a feeling of emotional or physical tension that may arise from any



Kalpana Chaudhary
Shreyanshi Teotia

Carbontetrachloride Hepatotoxicity In Hypo And Hyperthyroidic Rats



LAMBERT
Academic Publishing

Imprint

Any brand names and product names mentioned in this book are subject to trademark, brand or patent protection and are trademarks or registered trademarks of their respective holders. The use of brand names, product names, common names, trade names, product descriptions etc. even without a particular marking in this work is in no way to be construed to mean that such names may be regarded as unrestricted in respect of trademark and brand protection legislation and could thus be used by anyone.

Cover image: www.ingimage.com

Publisher

LAP LAMBERT Academic Publishing

is a trademark of

International Book Market Service Ltd., member of OmniScriptum Publishing Group

17 Meldrum Street, Beau Bassin 71504, Mauritius

Printed at: see last page

ISBN: 978-613-9-58248-8

Copyright © Kalpana Chaudhary, Shreyanshi Teotia

Copyright © 2018 International Book Market Service Ltd., member of
OmniScriptum Publishing Group

All rights reserved. Beau Bassin 2018

Carbontetrachloride Hepatotoxicity In Hypo And Hyperthyroidic Rats

BY

DR. KALPANA CHAUDHARY*

AND

MS. SHREYANSHI TEOTIA**

*ASSOCIATE PROFESSOR DEPTT OF ZOOLOGY R.G.P.G. COLLEGE MEERUT

** MBBS STUDENT SCHOOL OF MEDICAL SCIENCES & RESEARCH, SHARDHA
UNIVERSITY, GREATER NOIDA.

2018-19

सुबारा-दिसंबर 2018

ISSN: 2394-644X

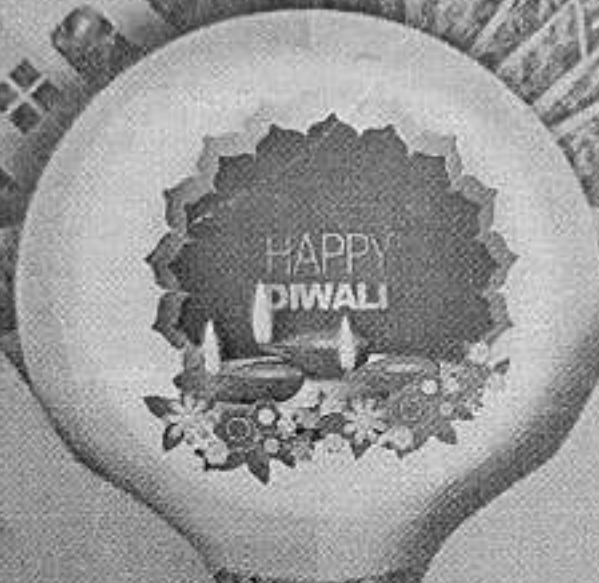
प्रकृति मथन

संस्थापक: प्रायशः राहु सुमथिल

केंद्रीय हिंदी लिपि-शाला (भारत सरकार) द्वारा अनुमोदित

50

**फल-सब्जियों में
कीटनाशकों का**



प्रकृति प्रहरी
संस्थापिका शर्मा

**पर्यावरण में
बनाएँ
करियर**

संपादक
मुकेश नादान



प्रकृति मंथन

...ताकि प्यारी रहे सुरभिला

पृष्ठ 6 : अंक 3-4

जुलाई-दिसंबर 2018

₹ 50



कहाँ क्या है?

आध्यात्म और योग/शिव अग्रवाल	5
क्यों आवश्यक है ध्यान और योग/डॉ० कल्पना चौधरी	7
योग साधना और स्वास्थ्य/रजनी मिह	9
रोहत से मिलती हैं खुशियाँ/जयवीर सिंह यादव	11
योग और खानपान/ममता नौगरीया	13
स्वास्थ्य रहने का महामंत्र : योग	15
स्वच्छता गीत/मुकेश नादान	17
घोजन और स्वास्थ्य/डॉ० संजीव गोयल	18
आपदा पर उठते सवाल/ डॉ० अनिल जोगी	20
सर-सर बकती हवा कह रही/ डॉ० रीता मिह	22

5 Years

सदस्य बनाइए!
उपहार पाइए!!



2 Years



शॉर्ट : शिवदास कोल्हा अतिरिक्त उपहार

PRAKARTI MANTHAN

506/13, SHASTRI NAGAR, MEERUT-250004
Ph.No : 0121-2709511, Mob : 09837292148
E-mail : prakartimanthan@gmail.com

SUBSCRIPTION 2 YEARS PR. 500/- 5 YEARS PR. 1000/-

Name

Address

PIN

Mob No.

Introducer Name



प्लास्टिक का विकल्प : हर्बल प्लास्टिक	57
गऊ संरक्षण की आवश्यकता/भानू प्रताप	59
योग साधना/राजेश्वरी गुप्ता	61
प्रकृति प्रहरी/ डॉ० सुनील शर्मा	64
भाप : सदी-छाँसी का स्वाधी उपचार/निरुपमा	65
करियर	66

कार्यालय

506/13, शास्त्री नगर

मेरठ-250004 (उ०प्र०)

दूरभाष : (0121) 2709511

e-mail : prakartimanthan@gmail.com



सदस्यता शुल्क

दो वर्ष : ₹ 400

पाँच वर्ष : ₹ 1000

आजीवन : ₹ 5000

डाक व्यव अतिरिक्त

क्यों आवश्यक है ध्यान और योग



डॉ० कल्पना चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
आर०जी० डिग्री कॉलेज, मेरठ

पहले सिर्फ शुद्ध चीजों से निर्मित घर के खाने को ही अधिक घरीयता दी जाती थी। इससे शरीर के अन्तरिक अंगों को शक्ति मिलती थी और इनमें लर्चालापन बरकार रहता था। अधिकतर दूध, दही, फल, हरी सब्जियों का ही खाना होता था। इसके विपरीत आजकल शाकाहारी खाने के बजाय जंक फूड्स व माँसाहारी खाने का चलन बहुत बढ़ गया है। इससे विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। अतः इन सब के निदान के लिए योग ध्यान अधिक आवश्यक हो गया है।

आज शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति रहा हो जिसे योग के महत्व का पता हो। प्रत्येक व्यक्ति योग और ध्यान के महत्व को भली-भाँति समझने लगा है। हमारे देश के याधु पहाड़ों और संन्यासियों ने पूरे विश्व में अपनी संस्कृति की उत्तमता का डंका बजाया है। इसमें योग, ध्यान (Meditation) व साधना का विशेष योगदान रहा है। अगर शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में बैठकर प्राणायाम ध्यान करने में शरीर को योगों से निजात मिलती है तो फिर एलोपैथिक दवाइयों और ऑपरेशन की चीर फाड़ आदि की प्रक्रियाओं से क्यों गुजरना?

अगर हम आज के दौर से तीन-चार दशकों से पहले की बात करें तो उस समय आज के मुकाबले वायु, जल व ध्वनि प्रदूषण बहुत ही कम था और लोगों के जीवन में भी आज की तरह भाग दौड़ व आपा-धापी नहीं थी। इसी भागदौड़ और उत्तेजना से मानव शरीर में विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। शरीर को जितना आराम, सुकून व नींद आदि मिलनी चाहिए, वह नहीं मिल पाती है। इसी के परिणामस्वरूप लोगों में उच्च रक्तचाप, मधुमेह व नाक, कान गले और मस्तिष्क को विभिन्न व्यक्तित्वात्मक उत्पन्न हो रही हैं। इनमें मनुष्य की अनियमित जीवन शैली व आधुनिक खान-पान भी कहीं ना कहीं महत्वपूर्ण सेल निभा रहे हैं। शरीर को सभी क्रियाओं को नियमित व गतिशील रखने के लिए योग, ध्यान व व्यायाम की क्रियाएँ अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं। आज के दौर में ये क्यों और भी अधिक जरूरी हो गई हैं, इसको जानने के लिए हमें निम्नलिखित कारकों को भी जानना आवश्यक है—

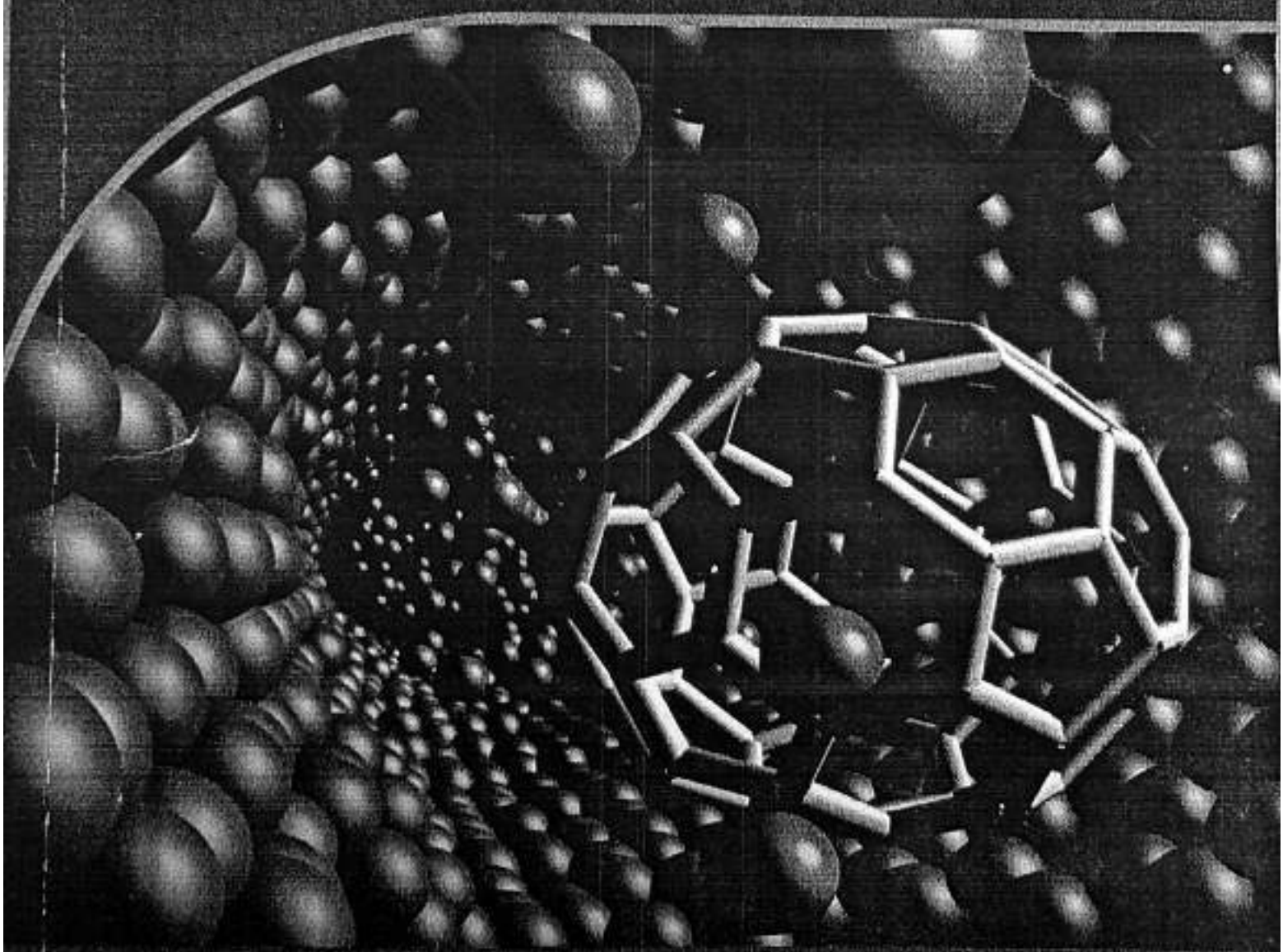
प्राकृतिक व पर्यावरणीय प्रभाव

पहले समय में वृक्षों, बागों, वनों और हरे भरे पैदानों की अधिकता थी जो आजकल के विकास की दौड़ ने बहुत ही संकुचित कर दी है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण और जलवायु में बहुत ही बदलाव ला दिया है। वर्षा का कम होना और वह भी समय से जो होना व मौसम व जलवायु में परिवर्तन वैश्विक गर्मीहट (global warming) को बढोका दिया है। पहले दौर में बच्चे व युवा कई-कई घण्टे बागों व पेड़ों पर 'काई डंडा' खेलते हुए वृक्षों पर चढ़ना, ऊपर से कूटना व लटकना आदि करते रहते थे, जिसमें स्वस्थ पर्यावरण में अच्छा खासा व्यायाम होता था। दूसरे गर्मी के दिनों में सुबह दो तीन घण्टे काम करने के बाद सभी दोपहर में खाना खाकर धने छायादार वृक्षों के नीचे इकट्ठे आराम करते व हास्य विनोद करते थे जिससे वे शारीरिक मजबूती



MECHANISTIC ASPECTS OF SOME REDOX REACTIONS

• DEEKSHA YAJURVEDI



PRAGATI PRAKASHAN, MEERUT

About the Author

Dr. Deeksha Yajurvedi is Asst. Professor in Department of Chemistry, Raghu Nath Girl's P.G. College, Meerut, U.P, India. She obtained her M. Sc. (Organic Chemistry) degree from M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly in year 2005 and subsequently qualified CSIR UGC-NET Examination in chemical science in the same year. She completed her research work and obtained Ph.D. degree in year 2008 from Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan. She has nine years of teaching experience in U.G. and P.G. classes. She has about 10 publication in peer reviewed refereed journals of national and international repute besides contributing in number of conferences/symposia. Her research area includes kinetic and mechanistic studies of redox systems and their reaction mechanism. She has contributed chapters in few edited books as well and has one minor project (U.G.C. funded) in her capacity.

About the Book

This book is a versatile book on Reaction Mechanism and Kinetic studies covering major kinetic and mechanistic aspects of redox systems including methodologies and findings. Purpose of book is to keep readers at ease in understanding basic concepts in kinetic studies.

Besides being beneficial to P.G. Classes, researchers and scholars, it is also useful to aspirants for various competitive examination.

This book will serve as a good reference book in field of research related to chemical kinetics.



PRAGATI PRAKASHAN

240, W.K. Road, Meerut-250 001
Tele/Fax : 0121-2643636, 2640642
SMS/Ph. : 0121-6451644, 6544642
www.pragatiprakashan.in
E-mail : pragatiprakashan@gmail.com

ISBN 938781212-X



9 789387 812123

CONTENTS

<i>Chapter</i>	<i>Page No.</i>
1. Oxidation studies by halochromates : An Introduction	1
2. Experimental and Computational techniques	23
3. Correlation analysis of reactivity in the oxidation of substituted benzyl alcohols by 2, 2-bipyridinium chlorochromate	31
4. Kinetics and mechanism of the oxidation of some unsaturated acids by morpholinium chlorochromate	64
5. Kinetics and mechanism of the oxidation of DL-Methionine by Quinolinium bromochromate	78